

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or description, covering the upper half of the cover. The text is heavily faded and difficult to decipher.

2432

ASIA ARCHIVES

ह्रीं काम देव नमः ॥२॥

कालदसिनें कलका योता सत्यं के
ते प्रसभसि सर्वकथानि निहा का यो विन
सेतिः ॥ ~~उवाचि~~ ~~काला~~ ~~पुष्ट~~ ~~रह~~ ~~पुष्ट~~ ~~नै~~ ~~कपुष्ट~~
सिक्ता ~~काला~~ ~~पुष्ट~~ ~~रह~~ ~~पुष्ट~~ ~~नै~~ ~~कपुष्ट~~
ह्रीं गता ॥ ~~पुष्ट~~ ~~रह~~ ~~पुष्ट~~ ~~नै~~ ~~कपुष्ट~~
को आ लु गी गा होष्ट काल संधे सता यो
न जो कटि नष्ट कल वन को गु जा गत्याम्
राष्ट्र काहिने को होत नतर गा रोष्ट ॥॥

~~ह्रीं गता~~ ~~पुष्ट~~ ~~रह~~ ~~पुष्ट~~ ~~नै~~ ~~कपुष्ट~~
को लोभ गार्हसका यो जन गत्याम् नि ये धा
न भाति हो ला अधि भलो भया पानि पाहि न कं व
कु का न हसते गार्ह मात्याम् यो काम गार्ह
न ॥ ~~पुष्ट~~ ~~रह~~ ~~पुष्ट~~ ~~नै~~ ~~कपुष्ट~~
सकल हृष्टा हो ला धन ला धन उडि जा
ला यो गार्ह उडि हलात्त न भलो हो ला स
सत्य गार्ह मात्याम् ॥॥ २ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥३॥

पेदानिउसंनैवईव्यलाभस्वजायेतेहोम
गंवचमाहासौछाईव्यलाभस्वजमेतेसी
धृष्टः॥प्रवासिमतापुद्गतहेएदोकतोरै-
वितायाकोका मरुरित्तोलानिदेसगधा
कोपुरंतधारभावलाः॥सेगवार्तिपुद्गतहे
एदोकआपुर्दिभलोहदोषकहिआधिने
ग्रहगति को कल ह ग्रह पुजिता गमासः
गेहिष्ठडेवता को पूजा गमास तब भला
होलाः॥३॥

गृहकार्यं पुनस्तथा च नृपराजानां
 साक्षात्तेन गृह्यते सुभक्त्योऽपि देव
 तान्को गुणान् गन्तास्तव भक्त्योऽपि
 भक्त्या पुनस्तथा च नृपराजानां
 साक्षात्तेन गृह्यते सुभक्त्योऽपि देव
 तान्को गुणान् गन्तास्तव भक्त्योऽपि
 भक्त्या पुनस्तथा च नृपराजानां
 साक्षात्तेन गृह्यते सुभक्त्योऽपि देव

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥

गते लक्ष्मीं का जाति हृद्यत लभ्यमाना ये
ते सौभाग्य सर्वकार्य सुसुत्रास्पद भवि
ष्यते ॥ प्रवासिनां तु उद्यत हृदये क्वचि
देसाग्रा कोलमसाति बाहो ध्या आनला
भर्षि ये जनमाया स सुखसंतोष संगधर
आ उला आनंद हः ॥ रोगिनां तु हृदये त हृदये
क आनंद भलो ह आनंद ह आनंद ह को
शेष हृदये देवता लो ह भाकि धिस्त ग्रह को

आनंदमास हृदये देवता को पुजा गन्धमास
तव नित्य होला ॥ हृदयवातां तु हृदये पुजा
क ते रोसु तो सुखपति ह न स के न लो क न
जनि मात्रे भाग लो तो जित होला ॥ गृहवाती
उद्यत हृदये क्वचि लो भावा गृह पुजे
धुलुष लो लो लो लो धन ला धि न हृदये वा
धन ला लो धि ये जन माया सः ॥ ४ ॥ ॥

श्रीमान्निर्गुणः ॥ ५ ॥

आदि श्रुति संकल्प इत्यादि भक्त्या ज्ञायते ते
भावे च साक्षात् इत्यादि भक्त्या ज्ञायते ते
धर्मः ॥ प्रवर्तमानां पुत्र तेषां कृष्णसिद्धि
प्राप्तिरिति गादिभावलाभेन जन्ममाप्नुयुः ॥
रिपुणां पुत्र तेषां कृष्णसिद्धि
इति रघुनामा आगाथा उच्यते ज्ञायते ते
पुत्रो मे सद्यस्तस्योपागच्छामस्तव भलो
होलाः ॥ ५ ॥

॥

॥

रुद्राणां पुत्र तेषां कृष्णसिद्धि
लहोला रक्तजुष्टा होला पादितो जित हो
ला धनला भराज प्रसाद होला गच्छांति पुत्र
ते पुत्र कर्माग्रिकल होला तादावच्छि
जिह्वान् कोषति होला जोगा उच्यते हात्वा
स्तव भलो होला सत्यगोपि माप्नुयुः ॥

॥ ५ ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ ६ ॥

गणेशाय नमः सर्वे भक्तानां भाविष्यति
महाभक्त्या युज्यमाने पादपद्मसोभा विधाति
प्रवाहिनी नदी प्रवृत्तते पद्मे क प्रवासिले बहु
तदुभयपद्मा भागिले जेवला मेना काटेन
पादधार आवला ॥ रोगिवार्ता प्रवृत्तते प
द्वेक रोगि को आशु र्गम नुद्ध धार देधि उत
एतत्तामस्य देधि उत एतत्तामस्य देधि उत
को देवद्वय काला शुभ्रा हले दो देवा राम

श्री गणेशाय नमः सर्वे भक्तानां भाविष्यति ॥ ६ ॥
प्रवृत्तते पद्मे क प्रवासिले बहु
तदुभयपद्मा भागिले जेवला मेना काटेन
पादधार आवला ॥ रोगिवार्ता प्रवृत्तते प
द्वेक रोगि को आशु र्गम नुद्ध धार देधि उत
एतत्तामस्य देधि उत एतत्तामस्य देधि उत
को देवद्वय काला शुभ्रा हले दो देवा राम
स गणेशाय नमः ॥ ६ ॥ ॥

~~श्री हनुमान चालीसा~~ ॥ ७ ॥

हनुमान सनै नृ न्व सा हा पात क नाम भूत स्य
 ले दु क दा र्त्त म धन लाभ स्र जाये ते ॥ १ ॥
 प्रवासी वार्ता पुछु नै पछु कवि देस गया
 लाभ लहि मना क दिन पाहु द्य आ उ न
 वे म कुल ल अ न न द ॥ ~~रोमि वार्ता पु~~
~~छत ले~~ ~~दु क लो अ को~~ आ दु र्ग भ लो छ ग
 ह गति को विचार छ ग र को क न ग न्या म्
 ग हा देव को पु जा ग न्या म् प्रा क्षत भोजन दीया

म ई छ ई छ देवता मना या म् त व भ लो है
 ला ॥ ~~हनुमान वार्ता पुछु नै पछु~~ नै क भु त
 दिन को वात छ ते रा ल नु नि नै छ न भ तु र भ
 या म् नि क न ले ले को म् मि छ हो ला ॥
 ग र वार्ता पु छत ले प छे क ग र म ला छ भ्रा पू
 भा म को क न द ते रा धा न जिक भु म्मा को
 ग र छ पु जा ग न्या म् त व भ लो है ला नि स
 न से ग रि मा ला ॥ ७ ॥ ॥

श्री मावर्ति सप्तमः ॥ ८ ॥

पार्वति सुसने न हंति पाप पुण्य कृपसा कुलम
तेनोद्युः शृङ्ग सज्जविनसेतोः प्रवासिना
ती पुष्टत हे वृक्षे क प्रवासि कुलसलह मघ
र आ वलाः ॥ रोगिवाती पुष्टत हे वृक्षे करो
मिको आशु दी भलो आनन्द हृदये कला ई
भाको नैर स्य चराई ई प्राम आशु सहे
तनिको होला ॥ सारावाती पुष्टत हे वृक्ष
कतेरा चित्त भ्रमंत हृतेरो भ्रम न ह्यो उल्लरो

भद्यास सज्ज आये भागला धनला कुल
राज प्रसाद होला ॥ मत्वाती पुष्टत हे वृक्ष
क आशु भाये को कुल हृदय भासा शेष के
हि आलि नरु ह भर्म के जत मा मास आ
कुल देवता को पुता गन्धार भुजा को पु
जा गन्धार तव भलो होला सन्याध येज
गमा मासः ॥ ८ ॥ ॥ ॥

श्रीवाराहसंहिता ॥ ५ ॥

नाहदसंनं कलकापी नाख भवि चोतिनि
पहलं धितं का यक्ष माहाद्ये न वडा कृष्णम् ॥
प्रवाहिवाता पदुतये पदो कं राना न ते क ह म
पहु अल्प कार्य भूत वडा क ह पित भना
कादि पाहु दार आव लाः रंग वार्ता पुष्ट
हे पक्ष्म आ पु द वि डो गौ ह व को प्राप्
भूत ह ह ग ह पा नु मार ह ह स विन दित्त मा
भुत को स व ह पु भु ल ले पु जा ग का मृत

व भलो होला ॥ मृगा वार्ता पुष्ट त हे प
क वि ता गा धि ये ज्ञा म उ र पा प वि ई
रा व ह म अ म दू भ द्यो ग र् ह न क ले त म भाने
होला लाभ ने सि आ धि त ॥ ग ह वार्ता पुष्ट
त हे प द्यो क ते रा वि ता धा को भु न ह न डार
का आ स पा स ह क ह ये ह ता हा भु त को
वास ह मी धर बा डि ह ल्या स त व भलो
हो न र व ये ग र मा मा ह ॥ ५ ॥ ॥

सुजडुसुनं रुखाका यासिद्धि भवि वेते
उजडुसुनं यंजातिला भक्तव पुनपुनः॥
प्रवासिनी तपि हते पदो क प्रवासि मे आ
पुडी भलो ह आत न मा हला भ सा हित मे
ना क दि न का ह दार आव ला ! हो नि य ला
पु ह त हे प द्य क आ पु डी भ लो ह दो ष के
हि ह न ग र गति को फल ह वे ड पारा म
ग रा या म ग र का द न ग या ह त न भ लो

हो ला ॥॥ रुखा वा तपि हते पदो क
क का ह व डे भ ल ह लो ला पा ह ते हो नि ला हो
ला ला भ या म ते रा स नु भु त ह र ह त
पा नि ता ला ध न ला भ हो ला : ग र वा ला
पु ह त हे प द्य क ग र उ बो मु जा गा ह ध न
ला सि क न आ फु भा ग प ह दार भा दो ष के हि
भा नि न आ प्र भो मे को फल ह दार वि स द
भो यि य ज नी म र ता व भ लो हो ला : ॥ १० ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥१९॥

मन्त्रि ५ मंत्रं चैदुष्यं गारि आनासेनं
मृदु न्यहाभो भवे तस्य नानि वस्तु
पालनम् ॥ गुणसिवाती पुष्ट तहें फ
सै नु मनासि छेम कसल सुस्त धार
आनलाः गीतिवार्ता पुष्ट तहें नु दावरे
गिले वन माहा अनह सद्ध सुधोदल
देवता को दोष्ट वाञ्छि म मा प हें लो पु
व रं लो उत्तर से तो सधिन कालो धजा

गया सत सै वन का अक्षोता गरे म
बि को नें वं दु गया स बाहना जा
ई पुजा गया सत वनि को होला ॥ ॥
गुणवार्ता पुष्ट तहें नु दावरे नु दिन
को गुणा निला हिरु बहु ता दुता ह्व
न भुजे लाभ होला ॥ गुणवार्ता पुष्ट तहें
न सुके लो रो विला या गह सु भद्धि परि
अ धनला देल लाभ हुना ह्व नि सु प गार
माया तन भलो होला ॥ १९ ॥

काष्ठपत्रदर्शनम् ॥१२॥

सुखं लभन्ते न चैव धीरुः कल्पान्
श्रेयसं प्रतप्ता चित्तं कथं धनं लाभो
भवे मेतिः प्रवासि कार्त्तिकुह तदेव
क्षेत्रं प्रवासि मे प्रकुसल आनन्दं
लोभं साहित्यं धौरेन्द्र साध्या आवला
तेति कार्त्तिकुह तदेव धनं कर्त्तव्यं
आयुर्धनं लोभं तोरा मे तमा एव
धनं तदिमाने भुम्भा को वासह
तत्को उ नाग वास तन्वति को हो लो ॥१३॥

स्वासा कार्त्तिकुह तदेव धनं कर्त्तव्यं
तनु तोरा धनं कर्त्तव्यं धन लाभ राजपु
सा हो ला यसा किंति लाभ हो लाः
रह कार्त्तिकुह तदेव धनं कर्त्तव्यं
धा का ग्रह मा सा हा आस पास सा ए
क हो दे द ताम मानि को ई देव ता को
वास ह तत्को उ नाग वास तन्वति को
रो ग ह सु भ हो ला धन ला इम व ड नि र नि
स्ते मा मासः ॥१४॥

श्री कृष्ण सर्वज्ञः ॥ १४ ॥

श्री कृष्ण सर्वज्ञः कृष्ण इति पाद रत्न कृष्णसि
द्धि तिसर्व का र्थं तं धनं लाभो भावि यति
॥ प्रकाशितं कर्ता प्रकृतं देव देव प्रकाशितु
म सत्तो मलाभ गार् आर्त्त सित धार आव
रुग रा शातं प्रकृतं देव देव कृते रा मत्र धर्म
कृते रा सत्र को मन पायै हू ज स्व गार् कृ
ल ले नैं स को वि धं स ग या व्यात सो ग
गृते रा सत्र को ना स हो लात नृ ते भ या व

तो लाई धन भुजिला भलो ला ॥ १५ ॥
कर्म प्रकृतं देव देव कृते गिको आ पुनी
लो हू जे स कृदि आ भित भ्रा फू ता पुन
देवता को पुजा गन्मा म ग्रह पाति ज्ञान ग
न्या सत्तव भलो हो लाः ॥ गद्द कर्ता प्रकृतं दे
व देव कृते धन लाई भोजा वि ला स सु संतो
म पुत्र फूत हो ला भर्म प्रकाश माया स
ति भ्य ये हो लाः ॥ १६ ॥

धीप्र...गामनमः ॥१५॥

अर्जुने नैव सन्निवसुष संतां वानितो भक्त
शुद्धभावा आसिद्धि भवति वांति तत्त्व
प्रकाशिवार्ता पुष्ट तद्देवदेव कृष्णो मि
कुसलदेव प्रभु आनन्द संगवा डै घाभा
उला ॥ मृगार कर्मा पुष्ट तद्देवदेव कृष्णो मि
मनुसंग एक शारत्त पुष्ट होला पादि
तेरो सत्र भागला तेरो जित होला यन पु
श्री लो भ होला त सु रो भ यो न तव भ

लो होला ॥ होति वार्ता पुष्ट तद्देवदेव
कृष्णो मि को आ. पु. र्ग भ लो छ छे न
पाला देवता को रो वेद एक फल भय
आहो संनित जार धुवा दिवने देवे रो गार
पु जा गमा स त वानि को होला ॥ मृ
गार पुष्ट तद्देवदेव कृष्णो मि
रो वेद होला त सु रो भ यो न तव भ
लो होला त य गारि ना त्या स ॥१५॥

श्री वंदनादसंज्ञम् ॥१६॥

वन्द्यं दर्शनं कला का पूर्णमासि माहम्
मं पुरा पत्र पाश्चात्त्या त्रैलोक्ये कृतज्ञ
कर्मः ॥ प्रकाशिकाः पुद्गलदेवदेवका
सि सुखसंतो बाहुना जै बाह्या ईषु
ला ॥ रोगी बार्ता पुद्गलदेवदेवका
पुद्गल भलो हू निचा जात को मो बाला
पिका वन्दन को मो है भावना गन्ध
तवाने को होला ॥१६॥

मृदा वाता पुद्गलदेवदेवका कुन
देखे सित विहोरा गारे हू म प्रकका
एव डोकल हू गली तिदान गन्धमास
तव का पूर्ण सिद्ध होला ॥ गन्ध वाता वि
देवदेव पुद्गलदेवदेवको मो जै जय सु
भू भू भू भू भू भू भू भू भू भू भू भू भू
लो बलु गुण शि सिला नदि धन नदि सवठ
ननु मा मे को फल हू नि छ प्रकाशिका
मासः ॥१६॥

श्रीराम उदयनामः ॥ १७ ॥

राकुदसिनेचैव ते गत्व क प्राप्ता भयानि
कलसर्वकार्यनिधनता मो भविष्य
मिः ~~पुनः सिवात् पुनः ते देवदेव~~
~~पुनः सिवमर्त्यक द होला धननास~~
~~होलाः ॥ सोमि मेरी पुनः ते देवदेव सोमि~~
~~कोया पुनः मेरी देव देव नासक द होला~~
~~पुनः सायुगाते भविष्य को बा पुनः~~
~~को देव देव पुनः गमना न को होलाः~~

~~हमरा वार्ता पुनः ते देवदेव ते सोम दे~~
~~होला तेरा सत्र को जय होला धननास~~
~~होला तेरा देव सिवात् कन सायुगा~~
~~घाडिहालास ॥ गमना वार्ता पुनः ते देवदेव~~
~~होला कोया सपास एक वडो देव सोम ते~~
~~पुनः भविष्य को बा घाडिहालास~~
~~भव भलो होलाः ॥ १७ ॥~~

श्रीवत्सलनिर्गुणः ॥१८॥ :

देवगुरुप्रसादेन हति पापपूत कृतं मूनामार्ग
तं कायं साहि भावितुं श्रेयः ॥ ~~प्रवर्तित~~
~~तं पुद्गलं ते पदे कं प्रवर्तित~~ धतला इति साहि
तं तां जे कै आई पुद्गल भाग प्रजन मा फल
रोगि वार्ता पुद्गल ते पदे कं रोगि को आयु
न भलो हुते राई देवता को दो अह तस्को
पुजा गमास गह पति दान गमास तव निजे
माला ॥१८॥ :

~~प्रवर्तित~~ पुद्गल ते पदे कं आधिते रास
ते पदो वल गली पाहु तेरो को लउ कहो
लास कुला ही जिति धर आवला सु ॥ १८ ॥
~~वार्ता पुद्गल ते पदे कं~~ वीर वीर के तेरा
धर का आस पास एक फल त्या पदे कं
रुतेर धर मास सुख संतोष ही लालो
धर जत छा आस तव भलो होला ॥१८॥

श्री गणेशाय नमः ॥ १४ ॥

गणेशाय नमः आपका रस मित्र यत्न
व्यतेदिता भोजनं शुभं लाभो भावे मात
प्रवासि नाली पुष्ट तहे पहे क प्रवासि
लाई धावनुधिपठवकुतै पाला नो
नै लाभ हो कि राडा जाई जा ना कि
पाउं धा आ प्रला ॥ रग रा नाली पुष्ट
तहे पहे क ते रो सनु भाई न त मा हा ल
डि जा ला नी क न धन सी ला भो हो ला भ

ने भवार्त्ता पुष्ट तहे पहे क दोष को ह
आयिन ते रो गृह गति को फुल्ल गृह
को पुजा गमाए आ फुल्ल गति को होला
॥ गृहवार्त्ता पुष्ट तहे पहे क ते रो घर गय
सुभद आ फुल्ल भागे को कृत छ पो घर च
डि जा ते वो हल न हो आ सुचिदा चिरग
आ सुतव भलो होला सत्या गी मा मा ल

॥ १५ ॥

श्रीकेशवदेवदेवः ॥२०॥

कगालदसिनेकत्वाकार्यहानिभाविअ
तिनेकलंसाकसत्तावशापराचपुन
पुन ॥ पुनसिनेसिनातापुछतेहेपदे
कप्रवासिनेनवसागुमाहिकनचोरिलेघ
रआवलाः लेगिवातापुछतेहेपदेक
आपुर्गीगाहेद्वनकाभुतकाभुयपया
कोहेकाताकुछरातेपुतागकासतवनि
कोलेला ॥ २०

हारावातापुछतेहेपदेकविगत
धनसिनेपरलोभगमेद्वसत्येजत
छोआसलाभकेहिआयेताविदानग
कासकोकैलाभहेला ॥ पुनवातापु
छतेहेपदेकतोभुमहघरकाआ
तपासएकवंडालभुतजनलासिवाति
हेलादुषकलेसवकुतेहेलातोद्याह
डिलापासतवभलोलेलाववनसत्ये
दिनायासः ॥ २० ॥

श्रीनंगलसर्ग ॥२१॥

मंगलसर्गनं कृतं भूमिपुत्रो प्रसिद्धति
पदे का नांका श्रीसिंहिताम श्रीनप
नयुन ॥ प्रशंसिवाती पुद्गलहे पदे क
मुत्तुभई कस पावला धारत आवला वुत्त
दिन जाई ॥ श्रीमिवाती पुद्गलहे पदे क
आसुत वडो गारो हू गा उका भुत आदि
निको को मछुदी धत दो बाहा नाला गवह
रातो वा काले कुगा गमाला वानि को होला

दशमवाती पुद्गलहे पदे क तोला भिलो
ला भ होला ते रो लकु लाई ना स होला ने
कन देव तारा न को प्रसा हो तो ए ल कु
लो फा न गला व डो व न डाल ह व न
जल ॥ गदवाती पुद्गलहे पदे क ते ते ग
ह व डते सुभ ह धत चा न्या ला दिस साहि
त भ लो होला गद डो गह न स ल दे गा
गमाल तव भला होला ॥ २१ ॥

श्रीगुरुदेवार्पणम् ॥२२॥

बुद्धिबलैर्दम्यं नं कृता सर्वकार्यफलप्रदा
पुष्टे कानां कासिद्धिं श्रेष्ठतया भो भवि
ष्यति ॥ पुनरसि वार्ता पुष्टे ते पुष्टे पुनर
सि वेष कृत् सललाप ताहि तया धावादा
माहि पुनो नमो देवनानाम् तानि
नोता पुष्टते पुष्टे क ते गि को भा पुष्टि
हते रा भाई का धा को बा पुष्टो दे व ह
तत्त्वो पुजा गन्धाम् गृह को भावता गन्ध

सुतवती को होला ॥ गृह वार्ता पुष्टे
ते पुष्टे क ते गि को हा को हते रो मनु
लि यो ह तो ला हि नि दन ग ली व हिते रो
का ज सिद्ध होला सत्पत्नी मान्याम् ॥
गृह वार्ता पुष्टे ते पुष्टे क ते रा धा आसि
वा स फल न्यास हो ह ते रा वि नो या गृह
सुमह धन लब्धि प्राप्ति होला भर्तृ वे जन
मान्या सुतव भलो होला ॥२२॥

~~श्रीगणेशाय नमः~~ ॥ २२ ॥

नेवेत्तं नरकं कति जायते पुरा कृतं प्रवृत्तं
नां कायं सिद्धिं दधत्ता लोभादि वाति
प्रवापि वाति ५६ तदेव देव प्रयास
मम कृतं लोभं वात्सावलाः ॥ मेरी
कोती पुत्रं तदेव देव कोती को भाग्य
भलो हस्तो धारका कुलदेवता को दोष
सत्यगारि मान्या सत्तु वनि को होलाः

२३

• ~~स्वर्गवार्ता प्रवृत्तं पदं ते एव नहि नंग~~
सत्रुका न देव पदं तद्वत् वली तग लीति
- सुतो भयासं वादि तो सत्रु भाग्य लातं
तलासं धिर्ज भयाथन ला भ होला ॥ ग
वार्ता पुत्र तदेव देव कते रोचिता धाग
सुभ दत्ता तेरो भाग्य धाग का दत्त धाछा
अलासं गत न दत्ता दत्त भला गला लीति
गी मायास ॥ २३ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥२४॥

सन्निवृत्तत्वेनेकातासाभविष्यति स्वकं
सन्नायं का ध्यानासाभविष्यति ॥ ५॥
वार्तापुत्रतरेपुत्रकप्रवासिपरन्त
कहलोलालसौहृद ॥ सेनियार्तापुत्र
नरेपुत्रकेआहुतमंदोदयकहल
जनकोभुतकोरोषधतत्कोपुजाग
माशुगदभातिदानगन्धामपनिबोले
२४

दृष्टातवार्तापुत्रतरेपुत्रकप्रवासिपरन्त
अनर्थगद्विरातातिप्रभतपापनि
ताउधस्तरोजियप्रयतिहोलापुत्र
विचारिगन्धाम ॥ ५॥ वार्तापुत्रतरेपु
त्रकतेरोधरुभद्वेतदुयकलेसावदुते
होलाधनाजियेयतिहोलातसगदमाभुतको
काहोदयोठाउधाराद्विहासतवमलो
होलातलेगदिमैरेगद्विहास ॥ २४ ॥

~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय~~ ॥२॥

सुखदस्य न वै बसर्व का प्राप्ति सिद्धियेत्
तत्कालमिदं तन्मात्रं जायते नात्र सत्यं
~~उवाच सावित्री~~ ~~मया~~ ~~पुनः~~ ~~वै~~ ~~वै~~ ~~क~~ ~~प्र~~ ~~वा~~ ~~सि~~
मया सति तज्जि को सुहृद् आह्वय गता सं
प्रियं प्रान्यासः ॥ ऐतिहासिकं पुनः वै
वेकं आशुदं भलो ह्येते वै जलं वागि मया
को नाशु को दोषो सुहावुर्नै नै नै नै नै नै
पामुको भवता ताम को उवाच पामासु नै नै नै

24

[illegible]

श्री गुरुदेव सवंग ॥ २६ ॥

गुरुदेव इस तेन सर्वकाय फललभैत दुर्जनस्ये
छ मद्याते लभ्ये वपु न दन ॥ ~~प्रसादिका~~
~~गुरुदेव ते देव कुंजसो ते देवता को~~
सादभरे मे स कुसल धर आवला ते मिया
~~गुरुदेव ते देव कुंजसो ते देवता को~~ आछु दी भलो
तेरा ईश देवता कना पास आछु सह
जनि को होना मजगारि मान्यासुं ॥ २६ ॥

~~गुरुदेव ते देव कुंजसो ते देवता को~~
गुरुदेव ते देव कुंजसो ते देवता को
उत होला तेरा घर का आस पास यव देवता
तस्को पूजा गया सत्य भलो लाला ॥ गुरु
देव ते देव कुंजसो ते देवता को
तेरा सत्र वडो धेंदु तसुरे भयासु
दि मत्र गया तेरा सत्र आछे भाग लानेरो
जित होला धन लक्षि प्रापि होला साधिय
जतमा माछु ॥ २६ ॥

भेमसेनसनेनकापीसिद्धिपाहासुचसर्व
 सनुअपंजातिधनलाभोभविष्येति ॥ २७ ॥
 सिक्तपिष्टुतेष्टद्वयप्रवासिलाभस
 हितवेजनुसलसितघाभावा ॥ लेखिका
 पिष्टुतेष्टद्वयप्रवासिलाभस
 नाकोशेषद्वयमेसीनकोपुजागम्यासुभा
 भ्याकोचराहिद्वयसुतवानिकोहोला ॥ २८ ॥

सुग्रावार्त्तिपिष्टुतेष्टद्वयप्रवासिलाभस
 रक्तजुष्टेहोलातेरासनुअनवलोभगह
 धोषिगद्वयतुरोभयासुतेरासनुआपेभा
 गलातेराजयहोला ॥ २९ ॥
 कतेरोचितायागद्वयसुभद्वयतेराधरकोकुलदेवता
 कोशेषद्वयमेसीनकोपुजागम्यासुभा
 भ्याकोचराहिद्वयसुतवानिकोहोला ॥ ३० ॥

श्री दुर्गाधनदत्तनम् २८

दुर्गाधनदत्तनेन कार्यो हानितव्येव च मर
नं सो क संताप बुद्धि हन मेव च प्रवासि
वार्ता पुछाते पद्ये क प्रवासि ले दुष क लेख
व दु ते मा फे बा ले चर आव ला दोष वार्ता
पुछाते पद्ये क आ पुर्ण मं दोष देव ता ला ह
उठाया को माल चल ही नि ह सु देव ता को
माल न रा ही दिहा ला सु त वार्ता को हो ला २८

दुर्गाधनदत्तनेन कार्यो हानितव्येव च मर
नं सो क संताप बुद्धि हन मेव च प्रवासि
वार्ता पुछाते पद्ये क प्रवासि ले दुष क लेख
व दु ते मा फे बा ले चर आव ला दोष वार्ता
पुछाते पद्ये क आ पुर्ण मं दोष देव ता ला ह
उठाया को माल चल ही नि ह सु देव ता को
माल न रा ही दिहा ला सु त वार्ता को हो ला २८

श्रीदेवि दर्शनम् ॥ २५ ॥

देवि दर्शनं कल्पते सिद्धि यैकम् दुष्टसु
विनासाय धन पुत्र पुदा यकम् ॥ प्रकाश
वार्त्ति ~~पुष्टते पुष्टेक प्रकाश~~ धनलाक्ष्मि
हितवडो धर आकला ~~मेगिवात्ति पुष्टते~~
~~पुष्टेक आशुदी भलो~~ देवि को दुष्टगया
सु ग्राह्यते को दान गयार तव भला हला

॥ २५ ॥

~~सारावार्त्ति पुष्टते पुष्टेक तेरो चिताया श~~
रामाभा ~~पुष्टते पुष्टेक~~ हरकले सा होला
एकवार वडो रक्तगुरु होला पाहु तेरो सुत्रा
भाग्यला ते कन धन प्राप्ति होला ॥ ग्राह्यते
~~पुष्टते पुष्टेक तेरो चिताया~~ गृह सुख संतोष
सुभद्र धनलाक्ष्मि प्राप्ति होला सुभद्र सत्य
ग्राह्यते ॥ २५ ॥

अतिर स्याति दसनेम् ॥ ३० ॥

सह स्याति दसनेनेत सनु सव विन सति प्राप्
भानं सर्व का धर्म पुलाभश्च व पुन पुनः
प्रवासि नार्ति पुद्गले पद्मे क प्रवासि मे
मन्दे सल लाभ सति धर आव ला ॥ तेति
नार्ति पुद्गले पद्मे क आ सु र्ति मलो छ
देवि लार्ति भा कि निसु भा का के दिहा ल
गद्गार्ति को भावना गन्धा सत नान को हो ला ॥

हृग्रावाता पुद्गले पद्मे क मि डो वचन गन्धा
सुतव सनु हात ले ला धन ला दिसु व संतो य
लो ला ॥ गद्गार्ति पुद्गले पद्मे क ते रो वित
गद्गार्ति भद्र धन ला दिसु पु वला भ हो ला वच
न ले गद्गार्ति गान्धा स ॥ ३० ॥

श्रीकामचन्द्रसिन्हा ॥ २१ ॥

कामधेनुः सनेत्र इति वाचपुत्रकृतम् । नृणां
 येषां गत्या पुत्रलाभो भविष्यति ॥ पुनः
 सिवात्तपुत्रं ते देवकप्रकाशिनश्च ये
 धत्तपुत्रलाभसादिभ्यश्च लाभाः ॥ ते
 गिवात्तपुत्रं ते देवकप्रकाशिनश्च ये
 न गृहसातिगयासुपात्रपुत्राणां न कोहो
 लानि चैव गारिमात्राः ॥ ३१ ॥

इसका नाम तुम्हारे पदों के तेरे सनुते
 अनपेक्षित मात्रै भाग ला सभा मा वो लप
 तिसकै न ताजित ला सुनि श्रै य मा मा स
 गदका रिपु हू ते पदों के गद वदु ते सुभ
 धन ला इस प्राप्ति हो ला तेरा गद का
 आस पास एक पद देखा हू माने देवता को
 या सदा तू को पुजा ग मा सतवान को हो ला

श्रीकंसदर्शनम् ॥३२॥

कंसदर्शनकल्पाकार्यनामो भावि धोती
देवे कष्ट भावितित्यधनतास्य भावि धे
ति ॥ ~~पुनः सिवार्ता पुनः तहे पहे~~ क आ पु
लाई कष्ट धनता सो दुख कलेस वहुत
होला ॥ ~~ये सिवार्ता पुनः तहे पहे~~ क आ
पुनः मंदो ~~प्रारंत कष्ट होला पुनी दे का~~
प्रानवा फोरे मरु धिवरो टो विचारि गारि
पामिदि साका दो पाठा मारा मिदि गुतिको होला ॥

~~स्य सवार्ता पुनः तहे पहे~~ कत वडो पापिह
स आ पु नास दु काज विताई रा विह सुविह
तायन जिय को लाभ गर्ह सुलो भले आ पु
नास गर्ह सु होला सो काम धाति हा ल्यास
तव भलो होला ॥ ~~स्य सवार्ता पुनः तहे पहे~~
क तेरा गह सुमहे न वडा भुत को नास ह
लो धा धाति हा ल्यास तव भलो होला साथे
गारि मान्यास ॥३२॥

श्रीरामचन्द्रसर्गम् ॥ ३३ ॥

रामचन्द्रसनेन हाते वाप पुराकृतम् सव
नस्य वधवरा मोलाका नाहर्व पुरितम्ः
प्रकाशिवार्तिपुद्गु तहे पदे एक प्रकाशिन
मानैव स्फुलिकन वाडै बरजा वला
॥ तेजि वाता पुद्गु तहे पदे क कुल देवता
कोशेष छ पुजा गन्धास ग्रह को दान ग
मास तव भलो होला सत्यगामिमासास ॥

३३

रामचन्द्रसनेन हाते वाप पुराकृतम् सव
नस्य वधवरा मोलाका नाहर्व पुरितम्ः
प्रकाशिवार्तिपुद्गु तहे पदे एक प्रकाशिन
मानैव स्फुलिकन वाडै बरजा वला
॥ तेजि वाता पुद्गु तहे पदे क कुल देवता
कोशेष छ पुजा गन्धास ग्रह को दान ग
मास तव भलो होला सत्यगामिमासास ॥
॥ गन्धास पुद्गु तहे पदे क ते
रोचिताया गहनि किल छ सुख स जोष
भलो छ धन लक्ष्मि पावै होला सत्यगामि
मास ॥ ३३ ॥

श्रीसितासंनमः ॥३५॥

सितासने कृत्वा तव कापां बिनसो दिते शुर्वे
लाभस्य लते नात्र संसयं ॥ ~~प्रसादितो~~
~~वतरे पदे क~~ ओक कले सा पार्श्विक न आ व
नकुल लसित धार भावला ॥ ~~संज्ञिकार्थ~~
~~वतरे पदे क~~ आशुर्द भलो वने क ह
नेन रो वि को दो घ दत स्को पुता गत्यात्
भाव भलो होला विज्ञान मायात् ॥३५॥

हृग्रा कार्तिपु दत ह पदे क आद्य वने क
ले सा को हृग्रा होला पादित रो सत्रु वने क
यका द्य धिर्भ मया सते हो सत्रु भा के भागला
तो कन धन प्रो सिला भ होला ॥ ~~मह~~ कार्तिपु
~~तरे पदे क~~ ते रो चिता गद बंचल ह वंचंत
जन गमात् सुभ द्य धन स्रिकन आ कुभाये
दस त्या गारि माकात् ॥३५॥

भीराजर्तुस्याराम ॥३६॥

राजर्तुस्यनने देवराजतथैवच आरोस्य
कमवेष्टिगुना यतेनात्रंससय ॥ पुनरिति
बोसिकार्तुद्वारेष्टेव प्रवाप्ति वेम
कुललक्ष ॥ कुतादिनपक्षु धरमावला ॥
राजिनार्तुद्वारेष्टेव कवनप्राजादिन
हसरे यानु उरायो भोवनको देवता को देव
विआपु रोगोद्वारेष्टेव तापहलासेता काल
भजगामा ॥ स्तैवर्न काङ्क्षा अहोता गन्त

भिकानैवेष्टे गन्तारवता र्पुजा गमास्त
वभलो होला ॥ ~~राजिनार्तुद्वारेष्टेव कतेरोल~~
दसुं द्विमात्रे तरोस्य नुमागला तो कनधन
नुमिला होला संधिजत्र मद्याह ॥ ~~राजि~~
तुद्वारेष्टेव कतेरोल धार सुभह आपिनन्या
काशकावेर्जो भिषह भते मात्व विमलमणे
राविमृता वेष्टेव दिगन्ता सुख भलो होला

श्री हनुमान दर्शनम् ॥ ६७ ॥

हनुमान दर्शनं सर्वसिद्धिद्विनाशोक्तिमा
हलास्मेला मन्त्रासौ भाग्यकृताय कम्

~~पुनर्वापि~~ ~~कुटुम्बे~~ ~~पद~~ ~~क~~ ~~मं~~ ~~प्र~~ ~~कु~~ ~~म~~ ~~न~~ ~~ध~~

आवलासाधिपमानास ॥ ~~सौमित्रा~~ ~~पु~~

~~ते~~ ~~पद~~ ~~आ~~ ~~यु~~ ~~र्ग~~ ~~भ~~ ~~ल~~ ~~ो~~ ~~व~~ ~~क~~ ~~स~~ ~~ह~~ ~~ो~~ ~~रे~~ ~~छ~~

ग्रहणाकोफलभासासहजानकोहा

लाः ॥ ६७ ॥

हग्रावार्तापुष्टते ~~प~~ ~~द्वे~~ ~~क~~ ~~ते~~ ~~वा~~ ~~त~~ ~~स~~ ~~व~~ ~~ो~~

~~व~~ ~~र~~ ~~क~~ ~~वा~~ ~~व~~ ~~डो~~ ~~यु~~ ~~ध~~ ~~े~~ ~~दो~~ ~~हो~~ ~~ला~~ ~~त~~ ~~सु~~ ~~रो~~ ~~भ~~

प्रासतेरोसुअपैभाजलातेराधरअनव

ठारहेलाधतलाभोहोला ॥ गृहवार्तापु

~~ध~~ ~~त~~ ~~हे~~ ~~प~~ ~~द~~ ~~क~~ ~~ते~~ ~~रो~~ ~~ग~~ ~~ह~~ ~~त~~ ~~य~~ ~~सु~~ ~~भ~~ ~~द~~ ~~त~~ ~~आ~~

पेछाउलासजतधाआसुतोकभलोहोला

लासत्यगारिमानासः ॥ ६७ ॥

भीमकारुर्लभ ॥ ३४ ॥

मकारुर्लभ तेन त्वेवकारुर्लभ भुवि यतो
मभर्त्ता भो भावीति प्रकरोतीति यतो भवे
त् ॥ प्रजातिवार्ता पुद्गलहे पद्मकपुवा
सि वदुं तैक लेस भर्त्तु कं धर आवहाः ॥
तेजिवार्ता पुद्गलहे पद्मकपुवा मंदो हते
ते घा मा का सो ला हि मा को वा पुद्गल तैसै
को दो घट्ट वदु ता विरा ग र्द्धा लो पु जा ग
मा र्त्त वान को ले ला ॥ ३४ ॥

प्रजातिवार्ता पुद्गलहे पद्मकपुवा मंदो हते
तेजिवार्ता पुद्गलहे पद्मकपुवा मंदो हते
ते घा मा का सो ला हि मा को वा पुद्गल तैसै
को दो घट्ट वदु ता विरा ग र्द्धा लो पु जा ग
मा र्त्त वान को ले ला ॥ ३४ ॥

का श्रुत्वा तस्मै सुकृ पदे पुनरिति यो भग्नो भूम्भ
ति गेदे लुप्ये नारे च लिखितं रेवति गेदे न
श्री श्री श्री भालिगं गा श्री सोति गं गाति
कटे मूचैव दे सोरसिगं श्री श्री ५ मुखर
देवता गिटेः श्री विजय भाद्र कप स्योति
षितम् ॥ सु भोमोरिस सुतो न नाना मे
ष सप्त स्य दास सप्ततारे सप्त सप्त स्यो
ने नो देव सवर चरेः सप्तपुत्रा सप्ततप

सिद्धि सा हितं वधु कापि या वापि ता याता भु
ता वां धवा तस्य रं कुल जनने भोग मे स्वर्ग सि
तां विद्या रूप विमल भन यत मम दुर्घ यनं
यते सर्व स्वर्ग शान तम यं धर्म एको वि
सहा हः ॥ १ ॥ यदुच्छेत् सप्त भेत प्रात्रा ह
न यदु भवेत् तत्तुष्ट मातु नति च न मे स्वा
तु धो वा सु सु धो वा मम दोषो नाडि यते ॥
स्वाति श्री सप्ततप ५ सप्ततपि न मार्च नदि
सप्त २ ५ ५

2432

LIBRARY OF THE
MUSEUM OF NATURAL HISTORY
NEW YORK